

पानी की महत्ता उस प्यासे गले से पूछिए जिसे इसकी एक बूंद अमृत सरीखी लगती है। कोई भी तरल अगर इसका विकल्प नहीं बन सका है तो यही इस प्राकृतिक संसाधन के अनमोलपने को बताने के लिए काफी है। एक तो हम धरती को बेपानी करते जा रहे हैं। दूसरे जो कुछ पानी धरती के जल स्रोतों और भूगर्भ में शेष बचा है, उन्हें प्रदूषित, शोषित करने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ रहे हैं। शायद हम अपनी भावी पीढ़ियों के सुखमय जीवन के प्रति कतई बेपरवाह हैं। तभी तो पेयजल की हाहाकारी किल्लत, और प्रदूषण की भयावह स्थिति को बताने वाले तमाम शोधों के निष्कर्ष हमें डरा नहीं पाते हैं। खैर, चैन से जीना है तो अब डर जाइए। भविष्य की चिंता छोड़िए, अपनी खैर मनाइए। आप जो पानी शहरों में पी रहे हैं, वह किसी धीमे जहर से कम नहीं है। हाल ही में भारत के करीब दो दर्जन शहरों में आपूर्ति किए जाने वाले पेयजल की

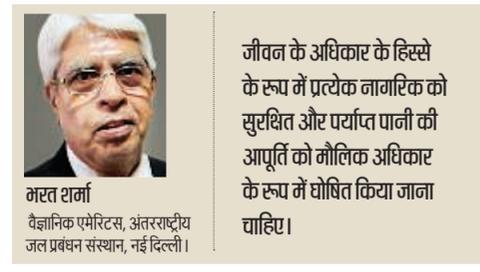
गुणवत्ता पर भारतीय मानक ब्यूरो ने एक रिपोर्ट जारी की है। इन राज्यों में नल के पानी से लिए गए नमूनों का दस मानकों पर परीक्षण किया गया। आप हैरान होंगे कि सिर्फ मुंबई को छोड़कर बाकी किसी भी शहर का पानी सभी मानकों पर खरा नहीं उतर पाया। दिल्ली का पानी तो सभी दस मानकों पर विफल साबित रहा। अब सोचिए, आजादी के सात दशक बाद भी अगर हमें साफ पानी पीने को मयस्सर नहीं है तो गलती किसकी है? सरकारों पर दोषारोपण करने से पहले अपने गिरेबां में भी हमें झांकना होगा। देश की करीब साठ फीसद आबादी ग्रामीण है। वहां जलापूर्ति की व्यवस्था नहीं है, लेकिन भूगर्भ से जो पेयजल वे निकाल रहे हैं, वह भी प्रदूषकों से विषाक्त हो चला है। जैसा बोएंगे वैसा ही काटेंगे। प्रकृति का बहुत स्पष्ट फलसफा है। ताली दोनों हाथों के मिलने पर ही बजेगी। तभी संभव होगी एक बूंद जिदगी की।

जल या जहर



जापान का प्रयोग
टॉयलेट फ्लश करने में पानी की सबसे अधिक बर्बादी होती है। फ्लश टैंक के आकार के आधार पर प्रत्येक फ्लश के साथ पांच से सात लीटर पानी बर्बाद होता है। इसे रोकने के लिए जापान ने एक नवोन्मेषी तरीका अपनाया। वहां की एक कंपनी ने शौचालय के फ्लश टैंक के ऊपर ही हाथ धोने के लिए वॉश बेसिन लगावा दिए। इससे हाथ धोने के बाद वे पानी फ्लश टैंक में चला जाता है और टॉयलेट फ्लश करने के लिए इस्तेमाल होता।

मौलिक अधिकार बने शुद्ध पेयजल



कथनी और करनी हो एक समान

केंद्रीय जल शक्ति मंत्री जगेंद्र सिंह शेखावत ने संसद में कहा है कि सबको शुद्ध पानी उपलब्ध कराने को मौलिक अधिकार बनाने का कोई प्रस्ताव नहीं है। हालांकि, इस मुद्दे पर भारत की विश्व स्तर पर स्थिति और सुप्रीम कोर्ट के निर्णयों के अनुसार, सरकार को इस दिशा में अग्रसर होना चाहिए। आइये जानते हैं ऐसा क्यों होना चाहिए:

प्रतिबद्धता
2010 में भारत ने संयुक्त राष्ट्र के प्रस्ताव ए/आर/एस/64/292 पर हस्ताक्षर किए थे। यह सुरक्षित और स्वच्छ पेयजल और स्वच्छता के अधिकार को मानव अधिकार के रूप में मान्यता देता है। इसका उद्देश्य देशों की जनसंख्या के लिए सुरक्षित, स्वच्छ, सुलभ और सस्ती पेयजल उपलब्ध कराने के प्रयासों को बढ़ाना।

सुप्रीम कोर्ट की सिफारिश
सुप्रीम कोर्ट ने विभिन्न निर्णयों के माध्यम से स्पष्ट किया है कि स्वच्छ पेयजल प्राप्त करना अनुच्छेद-21 के तहत मौलिक अधिकार है। उदाहरण के लिए, भारत सरकार के खिलाफ नर्मदा बचाओ आंदोलन से जुड़े मामले में, बांधों के निर्माण के सरकार के फैसले को बरकरार रखते हुए, सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि पानी... जीवन के अधिकार और मानवाधिकार के भाग के रूप में अनुच्छेद 21 में निहित है।

सख्त जरूरत
2018 में, भारत में, औसतन 7 लोग प्रतिदिन जलजनित बीमारियों से मारे गए। पिछले पांच वर्षों में यानी (2014 से 2018 तक) चार जल जनित बीमारियों (हैजा, गंभीर डायरिया, टाइफाइड और वायरल हेपेटाइटिस) के कारण लगभग 12,000 लोगों की मौत हो गई।

इन्कार क्यों
दस सालों में (2001 से 2011 के बीच) भारत में पानी की प्रति व्यक्ति उपलब्धता 15 फीसद गिर गई है यानी 1,816 घनमी से 1,544 घनमी तक। जल शक्ति मंत्री के मुताबिक, देश में लगभग 22 फीसद भूजल या तो सूख गया है या गंभीर स्थिति में है। इसके अलावा, यह जानते हुए भी कि केवल 30.80 फीसद ग्रामीण घरों और 70.60 फीसद शहरी घरों में नल के पानी की आपूर्ति होती है। शायद इसीलिए शुद्ध पेयजल को मौलिक अधिकार घोषित करना किसी चुनौती से कम नहीं। केंद्र सरकार ने जल जीवन मिशन के तहत 2022 तक 90 फीसद ग्रामीण घरों में पाइप के जरिये पानी पहुंचाने का लक्ष्य रखा है।

भारत में जल संसाधन, विशेष रूप से जल की गुणवत्ता और जल प्रदूषण की समस्या बहुत गंभीर है। देश अपने नागरिकों को स्वच्छ पानी की सुरक्षित और पर्याप्त आपूर्ति नहीं करा पा रहा है। हर साल चेन्नई, बेंगलुरु, शिमला, दिल्ली, लातूर जैसे कई अन्य शहरों और गांवों में पानी की किल्लत से लोग हलकावन हैं। 2018 में भारत सरकार की स्वयं की रिपोर्ट के अनुसार, भारत वर्तमान में सबसे खराब जल संकट से गुजर रहा है, क्योंकि 84 फीसद ग्रामीण घरों में पानी की पहुंच नहीं है और 70 फीसद से भी ज्यादा हमारे जल संसाधन दूषित हैं। दूषित स्रोत से सुरक्षित पानी की आपूर्ति करना बहुत महंगा और तकनीकी रूप से चुनौतीपूर्ण है। इसके अतिरिक्त, पानी की आपूर्ति के बुनियादी ढांचे पुराने और लीकेज युक्त हैं। नगरपालिका एजेंसियों के पास सीमित क्षमता और संसाधन हैं और किसी की भी कोई निश्चित जिम्मेदारी नहीं है। दूषित जल के लिए, भारत की जल उपचार क्षमता केवल 33 फीसद है और शेष दूषित जल को सीधे नदियों, झीलों और यहां तक की भूमिगत जलवाहकों में डाल दिया जाता है। बिहार और पश्चिम बंगाल में कई जिले जहरीले आर्सेनिक के मिश्रण वाले दूषित जल से प्रभावित हैं। वहीं ओडिशा और असम के लोग लोहा युक्त पानी पीने को मजबूर हैं। गुजरात और राजस्थान के लोग फ्लोराइड युक्त पानी पीने को मजबूर हैं और पंजाब का पानी घातक यूरेनियम और सेलेनियम से दूषित है। इन सभी को वैकल्पिक आपूर्ति या महंगे उपचार की आवश्यकता है। प्रदूषित पानी की खपत के प्रभाव सीधे या खाद्य आपूर्ति के माध्यम से निवारणकारी होते हैं। इसके परिणामस्वरूप खराब स्वास्थ्य, पोषण, पेट व ल्वचा के रोगों और महामारियों और यहां तक कि मृत्यु की आशंका बढ़ जाती है। इससे बंद बोलते हैं पानी का व्यापार तेजी से फल-

फूल रहा है, जिसे गरीब भी खरीदने को मजबूर हैं। अधिक चिंता की बात यह है कि गरीबों, बच्चों, बुजुर्गों और दुर्गमियों और कॉलोनिनों में रहने वाले बीमार लोगों को और गरीबों में धकेल दिया जाता है। इस स्थिति को सुधारने के लिए निम्नलिखित कदम उठा सकते हैं:-

- केंद्र सरकार ने जल जीवन मिशन के माध्यम से प्रत्येक 18 करोड़ घरों में पाइप के जरिये पानी की आपूर्ति का एलान किया है, ऐसे में योजना शुरू होते ही यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि आपूर्ति सुरक्षित और प्रदूषण रहित हो।
- सभी जल आपूर्ति एजेंसियों को नियमित रूप से आपूर्ति किए जा रहे पानी की गुणवत्ता की निगरानी करनी चाहिए।
- सरकारी और निजी सेक्टर को अंतरराष्ट्रीय मानकों की थर्ड पार्टी जल परीक्षण प्रयोगशालाओं की स्थापना करनी चाहिए और सभी नगरपालिकाओं को वर्ष में कम से कम दो बार अपने नमूनों का परीक्षण इन प्रयोगशालाओं में जरूर कराना चाहिए।
- शुष्क बस्तियों, कॉलोनिनों, औद्योगिक समूहों, सरकारी स्कूलों और अस्पतालों को स्वच्छ पानी की आपूर्ति के लिए विशेष प्रावधान किए जाने चाहिए।

दिल्ली की परेशानी

दिल्ली जलबोर्ड का दावा है कि सोनिया विहार सबसे अच्छे जल शोधन संयंत्रों में से एक है। आइए जानते हैं कि गंगा से आने वाला पानी दिल्ली के घरों में पहुंचने तक किन-किन शोधन चरणों से गुजरता है।

1. मुरादनगर से गंगा का पानी संयंत्र तक पहुंचता है।
2. फैक्टोड एयरट्रेट प्रक्रिया द्वारा पानी को स्वच्छ बनाया जाता है। ऑक्सीजन रंग हटाया जाता है। ऑक्सीकरण द्वारा बैक्टीरिया को कम किया जाता है।
3. क्लोरीन मिलाकर पानी को मथा जाता है।
4. पॉली एल्यूमिनियम बलोराइड मिलाकर पानी को सेडीमेंटेशन टैंक में भेज दिया जाता है।
5. गुरुत्व बल के कारण अशुद्धियां सेडीमेंटेशन टैंक की तली में बैठ जाती है।
6. फिल्ट्रेशन टैंक के सैंड बेड फिल्टर वैबर से पानी को गुजाया जाता है।
7. क्लोरीनेशन के बाद पानी को पॉपिंग केंद्रों तक पहुंचाया जाता है।

कंबोडिया का कमाल

कंबोडिया की राजधानी नॉम पेन्ह एक ऐसा शहर है जो तकनीक और विशेषज्ञता के मामले में भारत के दिल्ली, मुंबई जैसे शहरों से काफी पीछे है। वर्ष 1993 तक नॉम पेन्ह की जल आपूर्ति भारत के किसी भी बड़े शहर की तुलना में बदतर थी। कुशल प्रबंधन और मजबूत राजनीतिक सहयोग के दम पर 2003 तक इस शहर ने लोगों को 24 घंटे ऐसे पानी



मुंबई की कहानी

भारतीय मानक ब्यूरो की जांच में मुंबई के घरों में आपूर्ति हो रहे पानी के सभी नमूने सारे मानकों पर खरे साबित हुए। आर्थिक राजधानी ने यह उपलब्धि ऐसे नहीं हासिल की। कभी यहां एक लाख मामले गंभीर डायरिया के हुआ करते थे। बीएमसी (वृहन्मुंबई यूनिसिपल कारपोरेशन) के अनुसार 2018-19 के दौरान योजना जांचे जा रहे नमूनों में सिर्फ 0.7 फीसद में ही कोलीफॉर्म बैक्टीरिया के प्रति पॉजिटिव पाए गए। विश्व स्वास्थ्य संगठन का इसके लिए मानक 5 फीसद नमूने हैं।



ऐसे हुआ बदलाव

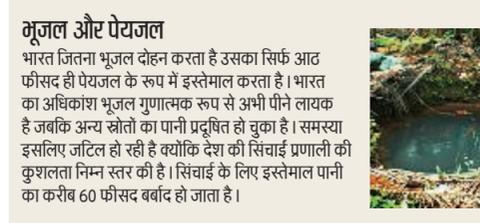
- 2012-13 में जलजनित बीमारियों के प्रकोप के बाद बीएमसी ने जल आपूर्ति तंत्र के बदलने का निश्चय किया।
- सतह की जलापूर्ति स्टील की पाइपलाइनों से होती थी। इसे भूमिगत कंक्रीट वाटर टनल में बदल दिया गया। आज ऐसी 14 टनल शहर में जलापूर्ति कर रही हैं।
- सीवेज लाइन के साथ-साथ जा रही वाटर पाइपलाइनों को एक छह या नौ इंच की पाइपलाइन से बदला गया।
- नेशनल एनवायरमेंटल इंजीनियरिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (नरी) की मदद से जल जांचने वाली प्रयोगशालाओं को आधुनिक किया गया।
- मेम्ब्रेन फिल्टर तकनीक अपनाई गई जो 24 घंटे में ही सटीक रीडिंग देती है।
- नमूनों की जांच जल आपूर्ति विभाग की जगह स्वास्थ्य विभाग देने लगा। वही प्रमाणित करता है कि यह पानी इंसानों के पीने योग्य है या नहीं।
- जलापूर्ति के हर केंद्र से नमूने लिए जाने शुरू हुए।
- दूषित पानी की शिकायत पर कदम उठाए जाने के समय में काफी कमी की गई। शिकायत मिलने पर तुरंत नमूने लिए जाते हैं। क्षेत्र की जलापूर्ति रोक दी जाती है। टैंकर तैनात कर दिए जाते हैं। उस पूरे इलाके के आपूर्ति तंत्र का पानी निकाला जाता है। फिर से आपूर्ति शुरू की जाती है और नमूने लिए जाते हैं। सही पाए जाने पर ही आपूर्ति शुरू की जाती है।

अभाव से आया दुष्प्रभाव

एक तो पानी है नहीं, थोड़ी मात्रा में जो पानी बचा है वो प्रदूषित है। वृंकि पानी की उपलब्धता कम हो चुकी है, लिहाजा उसमें प्रदूषण की सांद्रता बढ़ गई है। इसे आप ऐसे समझ सकते हैं कि एक गिलास पानी में एक मुट्ठी नमक डालने और एक बाल्टी पानी में इतनी ही मात्रा में नमक डालने का जो अंतर है, वही कम मात्रा में धरती पर उपलब्ध पानी के साथ हो रहा है।

70 फीसद गिरी उपलब्धता

1951 में प्रति व्यक्ति जल उपलब्धता 1577 घनमी थी, 2011 में घटकर 1545 घनमी हो चुकी है। यानी पिछले साठ साल में प्रति इसमें 70 फीसद की गिरावट आ चुकी है। अगर यह 1700 घनमी से कम रह जाती है तो अंतरराष्ट्रीय मानकों के हिसाब से उस क्षेत्र को वाटर स्ट्रेस माना जाता है। भारत जल वित्त श्रेणी की तरफ तेजी के साथ बढ़ रहा है। यह उस दशा को कहते हैं जब उपलब्धता एक हजार घनमी से कम रह जाती है।



भूजल और पेयजल

भारत जितना भूजल दोहन करता है उसका सिर्फ 8 आठ फीसद ही पेयजल के रूप में इस्तेमाल करता है। भारत का अधिकांश भूजल गुणात्मक रूप से अभी पीने लायक है जबकि अन्य स्रोतों का पानी प्रदूषित हो चुका है। समस्या इसलिए जटिल हो रही है क्योंकि देश की सिंचाई प्रणाली की कुशलता निम्न स्तर की है। सिंचाई के लिए इस्तेमाल पानी का करीब 60 फीसद बर्बाद हो जाता है।

भूजल का हाल

पेयजल के लिए सर्वाधिक इसी का इस्तेमाल होता है, लेकिन देश की कुल सिंचाई का 80 फीसद धरती की कोख को सुखाकर की जा रही है। ज्यादातर किसानों और उद्योगों द्वारा इसका दुरुपयोग किया जा रहा है। विश्व बैंक की एक रिपोर्ट के अनुसार इन दोनों मत्वों में देश के कुल भूजल का 12 फीसद हिस्सा खर्च किया जा रहा है।

उद्योगों की जरूरत

ज्यादातर उद्योगों ने भूजल निकालने के लिए खुद के बोरेवेल लगा रखे हैं। वर्ल्ड रिसोर्स इंस्टीट्यूट की एक रिपोर्ट के अनुसार 2013 से 2016 के बीच 14 से 20 थर्मल पावर प्लांट को पानी की किल्लत के चलते अपना काम बंद करना पड़ा था। उद्योगों को भी पानी इस्तेमाल के विकल्पों को तलाशना होगा, अथवा जितना पानी साल भर इस्तेमाल करते हैं उतनी मात्रा का धरती में पुनर्भरण करना पड़ेगा तभी समस्या से निजात मिल सकती है।

घरेलू बर्बादी और दोबारा उपयोग नहीं

हमारे घरों में इस्तेमाल होने वाला 80 फीसद पानी बर्बाद हो जाता है। अधिकांश मामलों में इस पानी को शुद्ध करके दूसरे या कृषि में इस्तेमाल नहीं हो पाता है। इजरायल और ऑस्ट्रेलिया में ऐसा नहीं है। इजरायल अपने शत-प्रतिशत इस्तेमाल पानी का शुद्धीकरण करता है और घर में इस्तेमाल होने वाले पानी के 94 फीसद को रिसाइकिल किया जाता है।

गिरता भूजल स्तर

भूजल स्तर 0.3 मीटर सालाना की दर से गिर रहा है। 2002 से 2008 के बीच भारत ने 109 घन किमी भूजल का इस्तेमाल किया है। यह देश के सबसे बड़े सरफेस जलाशय अपर वैनगंगा की क्षमता से दोगुना है। सिंचाई के लिए अन्य स्रोतों का इस्तेमाल बढ़ाकर भूजल के दबाव को कम किए जाने की जरूरत है।

जनमत

99% हा हा 01% नहीं नहीं

क्या शहरों के साथ गांवों में प्रदूषित पेयजल की बढ़ती समस्या आपको चिंतित करती है?

97% हा हा 03% नहीं नहीं

क्या समुचित जल प्रबंधन का अभाव देश में वाद, सूखा और पेयजल किल्लत की वजह बन रहा है?

आपकी आवाज

जल मानव जीवन का आधार है इसके दूषित होने से समस्या बड़ी गंभीर हो गई है। तत्काल बड़े कदम उठाने, कड़े कानूनों बनाने की आवश्यकता है।

अमन कुमार

जिस प्रकार से पानी के प्राकृतिक स्रोत कुएं, तालाब गांध हो रहे हैं, भूजल का स्तर गिरता जा रहा है और जल प्रदूषण बढ़ रहा उससे यह अपेक्षा लगाया जा सकता है कि आने वाली पीढ़ी को पीने वाला साफ पानी बहुत मुश्किल से मिलेगा।

राजेश कुमार चौधन

जल प्रबंधन को लेकर सरकार की नीति और नियत साफ नहीं है। बारिश का हजारां टन पानी यू ही नदी-नालों में बह जाता है। वहीं कई सार्वजनिक स्थानों पर पेयजलापूर्ति पाइप फटे रहने या नल में टूट न रहने के कारण पानी की बर्बादी होती है।

पानी पर बहाना होगा पसीना

पेयजल शुद्धिकरण और इसका वितरण प्रबंधन काम चलाऊ और अनौपचारिक प्रशिक्षण द्वारा किया जा रहा है। आज भी वर्षों पुरानी तकनीक का प्रयोग पानी के शुद्धिकरण और वितरण के लिए की जा रही है।

पानी और हवा ऐसे प्राकृतिक संसाधन हैं जिनके बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। आज के युग में शुद्ध हवा और शुद्ध पानी दोनों ही मिलना मुश्किल हो गया है। आज से बीस-पच्चीस साल पहले तक जब बोटल वाला पानी और आरओ इत्यादि उपलब्ध नहीं था तो नलों में सफाई होने वाला पानी सभी लोग निश्चिंत होकर पी लेते थे। परंतु अब जो लोग आर्थिक रूप से संपन्न हैं, उनकी कोशिश रहती है कि बॉटलबंद पानी से ही गला तर किया जाए। पिछले बीस-तीस साल में देश ने तकनीकी क्षेत्र में बहुत उन्नति की है। खासतौर पर सॉफ्टवेयर, अंतरिक्ष, ऑटोमोबाइल इत्यादि में भारत ने विश्व में अपना स्थान बनाया है। किंतु कुछ सेक्टर जैसे कृषि, ऊर्जा इत्यादि में हम उस मुकाबले में उन्नति नहीं कर पाए हैं। हवा, पानी जैसे कई अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्र तो बिलकुल ही पिछड़ गए हैं। नतीजा, पूर्वावर्ण और शुद्ध पानी की समस्या ने विकराल रूप धारण कर लिया है। भारत सरकार ने अब इसके लिए नए सिरे से युद्धस्तर पर प्रयास शुरू कर दिया है। पानी स्वास्थ्य के लिए तो महत्वपूर्ण है ही, इस क्षेत्र में रोजगार की भी असीम संभावनाएं हैं। उपयुक्त रणनीतिक योजना

आजकल

पहली बार टीवी पर दिखाया गया लाइव एनकाउंटर

1963 में आज ही अमेरिकी राष्ट्रपति जॉन एफ केनेडी के हत्यारे ली हार्वी ओसवाल्ट को पुलिस ने मार गिराया था। यह घटना केनेडी की हत्या के दो दिन बाद हुई थी। ऐसा पहली बार हुआ था कि दुनिया ने इस एनकाउंटर को टीवी पर लाइव देखा था।



चार्ल्स डार्विन ने पेश किया क्रमिक विकास का सिद्धांत

1859 में आज ही ब्रिटिश वैज्ञानिक चार्ल्स डार्विन ने क्रमिक विकास सिद्धांत के तहत बताया कि हर जीव प्रकृति की जरूरत के मुताबिक बदलाव लाकर ही अपना विकास करता है। जो ऐसा नहीं करता, वह खतम हो जाता है। इस शोध को उन्होंने ऑन द ओरिजिन ऑफ स्पेसीज नाम से प्रकाशित किया था।



मध्यवर्ग के नायक अमोल पालेकर को जन्मदिन मुबारक

अभिनेता और निर्देशक अमोल पालेकर का जन्म 1944 में आज ही मुंबई में हुआ था। अमोल ने फिल्म की करियर की शुरुआत 1971 में मराठी फिल्म से की थी। इसके बाद वह बॉलीवुड में आए।

1974 में आई फिल्म रजनीगंधा से दर्शकों के दिलों पर छा गए। यहीं से मिडिल क्लास के हीरो के तौर पर पहचान बनी। अमोल ने बतौर निर्देशक कई फिल्में बनाईं, जिनमें कच्ची धूप, नकाब और पहली शामिल हैं। पालेकर एक अच्छे पेंटर भी हैं। 1980 में उन्हें गोलमाल फिल्म के लिए फिल्म फेयर अवार्ड मिला। रजनीगंधा, धरोदा, गोलमाल बेहतरीन फिल्में रहीं।



इधर-उधर की

मौत का मांगा प्रमाण तो शव लेकर पहुंचे



प्रिटोरिया, एजेंसी : दक्षिण अफ्रीका में एक अजीबोगरीब घटना सामने आई है। यहां 46 साल के सिफिसो जस्टिस महेलो की मौत हो गई, जिसके बाद परिजन बीमा लेने के लिए इशोरेंस कंपनी के दफ्तर पहुंचे। लेकिन इशोरेंस कंपनी सिफिसो की मौत को मानने के लिए तैयार ही नहीं थी। परिजनों से उनके मौत को साबित करने के लिए कहा गया। परिवार वाले सिफिसो के मौत को साबित करने के लिए उनके शव को कब्र से निकालकर इशोरेंस कंपनी के दफ्तर पहुंच गए। इसके बाद यह घटना मीडिया में आ गई। अब यह मामला सोशल मीडिया पर भी काफी वायरल हो रहा है। एक टिवटर यूजर के द्वारा इस मामले का वीडियो साझा किया गया है। इस वीडियो को करीब 75 हजार से ज्यादा बार देखा जा चुका है। मामला तूल फकड़ता देख इशोरेंस कंपनी ने सिफिसो के परिवार को बीमा का भुगतान कर दिया है।

अब दूर बैठे व्यक्ति के स्पर्श का अहसास कराएगी नई डिवाइस

तकनीक ▶ वीडियो कॉल के साथ एक-दूसरे को छू भी सकते हैं

अमेरिका की नार्थवेस्टर्न यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने किया विकसित



प्रतीकचक्र

बांशिंग्टन, प्रेट्र : वर्चुअल रियलिटी की दुनिया में वैज्ञानिकों ने एक नई डिवाइस बनाई है, जिसके माध्यम से कहीं दूर बैठे व्यक्ति को भी छूने का अहसास किया जा सकता है। शोधकर्ताओं ने एक नई पतली, वायरलेस डिवाइस विकसित की है। जो किसी वर्चुअल रियलिटी (वीआर) में स्पर्श का अनुभव भी जोड़ती है। इस डिवाइस की मदद से लोग वीडियो कॉल के दौरान एक दूसरे को छूकर महसूस भी कर सकते हैं। इसके साथ ही यह मनोरंजन के क्षेत्र में भी काम आ सकता है। इस सिस्टम को अमेरिका की नार्थवेस्टर्न यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने विकसित किया है। इसका नाम 'इपिडर्मल वीआर' रखा गया है। इसमें रियलिकान की एक पतली लचीली परत के अंदर एक्ट्यूएटर्स लगे हुए हैं जो वाइब्रेट होते और घूमते रहते हैं। यह

एक्ट्यूएटर्स स्पर्श का अहसास कराते हैं।

'नेचर' जर्नल में प्रकाशित अध्ययन में इस सिस्टम के बारे में बताया गया है। यह डिवाइस 15 सेमी चौड़ी और 15 सेमी लंबी एक लचीली परत होती है। इसमें एक वायरलेस पावर सर्किट होता है। नार्थवेस्टर्न यूनिवर्सिटी के जॉन ए गुजरन ने कहा कि यह डिवाइस इतनी हल्की होती है कि उपयोगकर्ता के ऊपर बोझ नहीं बनती है।

इस तरह से करता है काम : शोधकर्ताओं ने बताया कि यह डिवाइस एक तरह से लचीली परत है। जिसका कनेक्शन कंप्यूटर के एक

वायरलेस है यह डिवाइस

शोधकर्ताओं ने बताया कि यह डिवाइस इलेक्ट्रॉनिक रूप से बेहद हल्की है। यह पूरी तरह से वायरलेस है। इसमें बाहर से कोई बैटरी लगाने की भी जरूरत नहीं पड़ती है। इस कारण यह उपयोग में बेहद आसान भी है।

विशेष सॉफ्टवेयर से रहता है। दूर बैठे कोई व्यक्ति जब कंप्यूटर में इसी सॉफ्टवेयर के माध्यम से छूता है तो दूर बैठे व्यक्ति इस डिवाइस के माध्यम से इस स्पर्श को महसूस कर सकता है। इस डिवाइस में मौजूद एक्ट्यूएटर्स (विशेष प्रकार के गोल छल्ले) वाइब्रेट या घूम करके स्पर्श का अहसास कराते हैं। मिलामीटर के आकार के 32 एक्ट्यूएटर्स इस डिवाइस में लगे होते हैं। शोधकर्ताओं ने बताया कि एक्ट्यूएटर्स एक बार में 200 बार घूमता है। इस डिवाइस को स्मार्टफोन और टैबलेट से भी जोड़ा जा सकता है।

शोध अनुसंधान

पार्किंसन का खतरा बढ़ाती है ज्यादा एंटीबायोटिक दवाएं



एंटीबायोटिक दवाओं का बहुत ज्यादा सेवन करने वाले लोग सचेत हो जाएं। एक नए अध्ययन का दावा है कि इस तरह की आम दवाओं के अत्यधिक इस्तेमाल से पार्किंसन रोग का खतरा बढ़ सकता है। तंत्रिका तंत्र संबंधी इस बीमारी में पीड़ित व्यक्ति के हाथ-पैर कांपने लगते हैं और उसे संतुलन बनाने में मुश्किल आती है। शोधकर्ताओं के अनुसार, यह निकर्ष पार्किंसन रोग से पीड़ित करीब 14 हजार लोगों पर किए गए अध्ययन के आधार पर निकला गया है। इस अध्ययन के नतीजों से यह जाहिर हुआ कि कुछ खास एंटीबायोटिक दवाओं से पार्किंसन का खतरा हो सकता है। शोधकर्ताओं ने पांच, दस और 15 साल की तीन अवधियों के दौरान रोगियों में एंटीबायोटिक दवाओं के इस्तेमाल पर गौर किया था। फिनलैंड की हेलसिंकी यूनिवर्सिटी के शोधकर्ता फिलीप शेपरजेंस ने कहा, 'हमारे नतीजों से पता चलता है कि आमतौर पर इस्तेमाल होने वाली कुछ एंटीबायोटिक दवाएं बीमारी का कारक हो सकती हैं।' -प्रेट्र

एआइ से टीवी के लिए तैयार हो सकेगी ज्यादा प्रभावी दवा

शोधकर्ताओं ने आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआइ) की मदद से टीवी के उपचार को ज्यादा प्रभावी बनाने में सफलता पाई है। उन्होंने इंडिगो नामक एक ऐसा साफ्टवेयर टूल विकसित किया है, जिसकी मदद से इस बीमारी के इलाज के लिए ज्यादा प्रभावी दवा तैयार की जा सकती है। अमेरिका की मिशिगन यूनिवर्सिटी में बायोमेडिकल के असिस्टेंट प्रोफेसर श्रीराम चंद्रशेखरन ने कहा, 'इस तरीके से दवाओं के विकास की हमारी पारंपरिक प्रणाली बदल सकती है। यह प्रणाली तुलनात्मक रूप से धीमी और महंगी है।' जबकि इस अध्ययन से जुड़ी शोधकर्ता शुची मा ने कहा, 'यह टूल दवा संयोजन की गतिविधि का एकदम सटीक अनुमान लगा सकता है। इसकी मदद से ऐसे जिन की भी पहचान हो सकती है, जो इन दवाओं की प्रतिक्रिया को नियंत्रित करते हैं।' -एनआइ

प्रतिबंधित साइट खोल सकता है एआइ

वांशिंग्टन, प्रेट्र : वैज्ञानिकों ने एक ऐसा आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआइ) टूल तैयार किया है जो स्वयं ही इंटरनेट में लगी सेंसरशिप का अवलोकन कर उन साइटों को खोल (अनब्लॉक) सकता है, जिन्हें प्रतिबंधित कर दिया जाता है। यह उपकरण उन देशों के लोगों के लिए फायदेमंद हो सकता है, जहां सरकारें अपने नागरिकों को किसी भी विषय के बारे में हकीकत से रूबरू करवाने की बजाय इंटरनेट पर मिलने वाली सूचनाओं पर भी बैन लगा देती है। एक अध्ययन में वैज्ञानिकों का कहना है कि इस उपकरण को विकसित करने का मकसद संचार की खुली व्यवस्था को कायम करना है।

इस अध्ययन में अमेरिका की यूनिवर्सिटी ऑफ मैरीलैंड (यूपीएम) के शोधकर्ताओं ने कई देशों में इस टूल का परीक्षण भी किया है। इस दौरान उन्होंने सेंसरशिप को धेदने के दर्जनों तरीके ढूंढे। शोधकर्ताओं ने इस टूल का नाम जेनेवा रखा है। इंटरनेट और सोशल मीडिया की इस नई दौड़ में फिलहाल जेनेवा पहला कदम प्रस्तुत करता दिख रहा है। शोधकर्ताओं ने कहा कि उनका मकसद दुनियाभर के लाखों उपयोगकर्ताओं के लिए खुला संचार लाना है।

मल्टीप्लेयर गेम में पेशेवर खिलाड़ियों को भी मिनटों में हरा सकता है एआइ

बोस्टन, प्रेट्र : एमआइटी के शोधकर्ताओं ने आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआइ) से लैस बॉट विकसित किया है, जिसके बारे में उनका कहना है कि यह इंसानों को उन ऑनलाइन मल्टीप्लेयर गेम में हरा सकता है जहां खिलाड़ी की भूमिका और मकसद गुप्त रहते हैं।

हाल ही के वर्षों में मल्टीप्लेयर गेम में इंसानों के साथ खेलने के लिए कई तरह के गेमिंग बॉट बनाए गए हैं। इस वर्ष अमेरिका की कर्नेगी मेलॉन संघम की खुली व्यवस्था को कायम करना है। एसा बॉट विकसित किया जो एक मल्टीप्लेयर गेम में पेशेवरों को हरा सकता है। इस बॉट का नाम 'डीपरोल' रखा गया है।

अमेरिका की मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के शोधकर्ताओं ने बताया कि उन्होंने ऑनलाइन गेम 'द रॉसस्ट्रेट: एवर्लॉन' के 4000 से अधिक राउंड में मानव खिलाड़ियों के साथ डीपरोल को पेश किया। इसमें पाया गया कि डीपरोल ने लगातार साथी के रूप में बहुत अच्छा काम किया और अपने प्रतिद्वंद्वी को

एमआइटी के शोधकर्ताओं ने किया विकसित, नाम रखा 'डीपरोल'

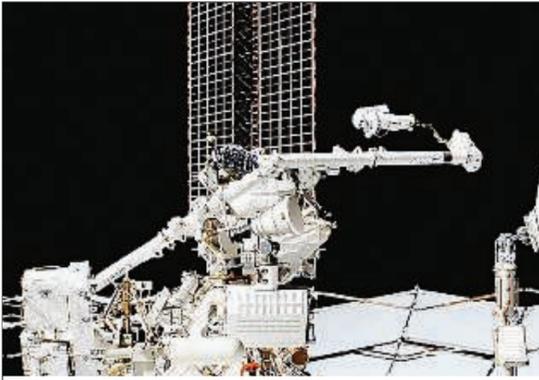
4000 से अधिक राउंड में मानव खिलाड़ियों को हरा चुका है यह बॉट



अपने ही खिलाफ खेलकर गेम खेलना सीखता है यह एआइ। प्रतीकचक्र

पछाड़ दिया। एमआइटी के जैक सेरिनो ने कहा कि अगर गेम के दौरान अपनी टीम से आप किसी इंसान को बॉट से बदल देते हैं तो आपके जीतने की उम्मीद बहुत बढ़ जाती है। बॉट एक बेहतर भागीदार है।

डीपरोल को बनाने के लिए एक गेम प्लानिंग एल्गोरिदम का उपयोग किया गया है। जिसका नाम 'काउंटरफेक्युअल ग्लिट मिनिमिजेशन' (सीएफआर) है। यह अपने ही खिलाफ कई बार खेलकर गेम खेलना सीखता है। खेल के



साहसिक करतब

फ्रांस की राजधानी पेरिस के बिजनेस डिस्ट्रिक्ट ला डिफेंस में 25 वर्षीय युवाक नाथन पाउलिन ने बिना सुरक्षा उपकरणों के 150 मीटर ऊपर पतली सी रस्सी पर वॉक किया। इसका मकसद मेडिकल रिसर्च के लिए धन जुटाना था। टाइटोरो वॉकिंग में एकाग्रता, कठोर अभ्यास और संकल्प की जरूरत होती है। एएफपी

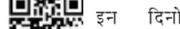


आइएसएस की हार्ट बाइपास सर्जरी...

अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आइएसएस) पर बीते शुक्रवार को स्पेसवॉक की गई। अंतरिक्षयात्री लुका परमिटानो ने आइएसएस में लगी अल्फा मैग्नेटिक स्पेक्ट्रोमीटर की फिटिंग की। यह स्पेक्ट्रोमीटर ब्रह्मांड की किरणों को डिटेक्ट करती है। लुका ने इस दौरान आइएसएस में लगी रोबोटिक आर्म कैनाडामे 2 का उपयोग किया। यह एक हफ्ते के अंदर दूसरी स्पेसवॉक थी। नासा ने इस मिशन को आइएसएस की हार्ट बाइपास सर्जरी जैसा ही संवेदनशील बताया है। बताया कि चार स्पेसवॉक में इसकी मरम्मत की जाएगी। एपी

स्क्रीन शॉट

किरदार निभाने के लिए इमोशनस दिल से आने चाहिए : अर्जुन कपूर



इन दिनों लगातार ऐतिहासिक फिल्में बन रही हैं। इस कड़ी में पानीपत की तीसरी लड़ाई पर आधारित फिल्म 'पानीपत' छह दिनों के रिलीज होगी। अर्जुन कपूर, कृति सैनन अभिनीत इस फिल्म का गाना 'मन में शिवा...' शनिवार को मुंबई में रिलीज किया गया। इस शोके के लिए निर्देशक आशुतोष गोवारिकर, उनकी पत्नी और निर्माता सुनीता गोवारिकर, अर्जुन कपूर, कृति सैनन और संगीतकार अजय-अतुल मौजूद थे। अर्जुन की यह पहली पीरियड फिल्म होगी। इसमें वह मराठा योद्धा सदाशिव

'पंगा' में होगी दो सहेलियों की कहानी



राव भाऊ का किरदार निभा रहे हैं। अर्जुन का कहना है कि इस किरदार को समझने को लेकर वह किताबें पढ़ सकते थे, लेकिन उन्होंने निर्देशक के विजन पर भरोसा किया। उन्होंने कहा, 'सदाशिव राव भाऊ की जिंदगी के कई पहलू इसमें देखने को मिलेंगे। मैं इतिहास खुद पढ़ने लगता तो मैं ही फिल्म को डायरेक्ट करने लगता। हमें किरदारों को पढ़ें पर लाना है। वह हीरो हो सकता है, लेकिन वह चारदीवारी के अंदर इंसान भी होता है। सदाशिव राव के लिए देश पहले था। फिल्म में दिल से इमोशन आएं तो सब अपने आप सही हो जाएगा।' अर्जुन के दोस्त रणवीर सिंह पीरियड फिल्मों को लेकर अनुभव हैं। ऐसे में दोनों के बीच फिल्म को लेकर क्या बातें हुई? इसके जवाब में अर्जुन कहते हैं, 'हम काम को लेकर ज्यादा बातें नहीं करते।

अध्ययन तो यह है पृथ्वी की सबसे निर्जन जगह

शोधकर्ताओं ने बताया है कि पृथ्वी पर भी ऐसी जगह मौजूद हैं जहां जीवन की संभावना नहीं है, बताया-इथियोपिया के दलोल क्षेत्र में किसी भी प्रकार का सूक्ष्मजीव नहीं पनप सकता है

लंदन, प्रेट्र : दुनिया में एक ऐसी जगह है जहां पानी की प्रचुर मात्रा के बावजूद किसी भी तरह का जीवन नहीं है। इथियोपिया के दलोल भूतापीय क्षेत्र में गर्म, खारे और अधिक अम्ल वाले तालाब मौजूद हैं। हाल ही में सामने आई रिसर्च ने यह जानकारी दी है।

इस रिसर्च के मुताबिक, सूक्ष्मजीवों में आश्चर्यजनक रूप से पृथ्वी के किसी भी दुष्कर वातावरण को अपनाते की क्षमता होती है, लेकिन दलोल भूतापीय क्षेत्र में इनका रहना भी संभव नहीं है। दलोल का भूदृश्य पेशान करने वाला है जो कि इथियोपिया की निचली जगह दनाकिल में मौजूद है। इसका विस्तार ज्वालामुखी के मुहाने तक स्थित है जो कि नमक, हानिकारक गैसों और उबलते पानी से लैस है। सर्दियों में यहां का तापमान 45 डिग्री सेल्सियस से ज्यादा हो सकता है। यहां तक की पीपच मान भी लागू नकलान्वक होता है।

फ्रेंच-स्पैनिश वैज्ञानिकों की टीम का नेतृत्व कर रहे जीव विज्ञानी लोपेज गर्सिया ने कहा कि कई नमूनों का विश्लेषण करने के बाद हम इस नतीजों पर पहुंचे हैं कि यहां पर सूक्ष्मजीवों का जीवन नहीं है। यहां तक की निकटवर्ती मैग्नेशियम से संपन्न खारे पानी की झील में भी जीवन नहीं है। उन्होंने कहा कि



यहां पर मौजूद है कई रंगों की झीलें

खारा पानी जल ज्वालामुखी से निकलने वाले खनिजों और लावा के साथ मिलता है, तो कई तरह के चमकीले रंग पैदा करता है। अम्लीय तालाब में जब सल्फर और नमक एक दूसरे के साथ मिलते हैं तो चमकीला पीला रंग दिखाई देता है। जब ये तांबा नमक के साथ मिलता है तो चमकीला फिरोजी रंग तैयार होता है।

इस क्षेत्र में सूक्ष्मजीव का फैलाव हवा और लोगों के आवागमन से है। कुछ समय पूर्व टीम का लेख नेचर इकोलॉजी एंड इवोल्यूशन में छपा था। उन्होंने कहा कि इस रिसर्च से रहने की गांवीं को सीमित करने और पृथ्वी और उससे आगे की आकृति और जीवन संबंधी धामलों को जानने में मदद मिलेगी।

स्पैनिश फाउंडेशन फॉर साइंस एंड टेक्नोलॉजी (एफईसीआईटी) के शोधकर्ताओं ने कहा कि

दनाकिल में पृथ्वी की तीन कॉन्टिनेंटल प्लेट आसपस में टकराती हैं। इस वजह से यहां धरती से लावा और एसिड भी बाहर आता रहता है।

उन्होंने बताया कि यह जगह समुद्र की सतह से करीब 330 फुट नीचे है। कभी- कभार मुश्किल से यहां बरसात होती है, वरना यहां पिघला हुआ लावा अक्सर रिसता रहता है। यहां दो ऐसे ज्वालामुखी हैं जो अक्सर सक्रिय रहते हैं।

लेखकों-निर्देशकों की जीत है 'बाला' की उपलब्धि : यामी

आयुष्यान खुराना, यामी गौतम और भूमि पेडणेकर की फिल्म 'बाला' सौ करोड़ के क्लब में शामिल हो गई है। शनिवार तक फिल्म की कमाई 100.15 करोड़ रही। यह आयुष्यान के करियर की इस वर्ष रिलीज हुई 'झीमल' के बाद सौ करोड़ के क्लब में शामिल होने वाली दूसरी फिल्म होगी।

रूटीन फिल्मों से हटकर फिल्मों देखने को मिल रही हैं। 'यामी कहती हैं, 'यह इस बात का प्रतीक है कि हमारा फिल्में का चयन सही है और हम सही काम कर रहे हैं।' यामी कहती हैं, 'बाला और 'उरी' फिल्मों ने मेरी छवि बदलने का मौका दिया। मैं एक एक्टर के रूप में अपनी क्षमता जानती हूँ, लेकिन जब तक आपको उस तरह का काम नहीं मिलेगा, एक बुरा फिल्मों के साथ काम नहीं मिलेगा, आप बाद दूसरी फिल्में हैं, जिसने इस साल 100 करोड़ का आंकड़ा पार किया है। यामी कहती हैं, 'यह एक के लिए मुझे मस मस कहिए तो दूसरे के लिए मौजूद चाहिए।' दिल्ली में शूटिंग करके इमरान पोर्लेट में शूटिंग करेंगे।

मैं अपनी क्षमता जानती हूँ, लेकिन जब तक आपको उस तरह का काम नहीं मिलेगा, एक बुरा फिल्मों के साथ काम नहीं मिलेगा, आप बाद दूसरी फिल्में हैं, जिसने इस साल 100 करोड़ का आंकड़ा पार किया है। यामी कहती हैं, 'यह एक के लिए मुझे मस मस कहिए तो दूसरे के लिए मौजूद चाहिए।' दिल्ली में शूटिंग करके इमरान पोर्लेट में शूटिंग करेंगे।

दिल्ली में शूटिंग के लिए इमरान को चाहिए गैस मार्स्क

अभिनेता इमरान हाशमी इस समय राजधानी दिल्ली में फिल्म 'चेहेरे' की शूटिंग कर रहे हैं। दिल्ली को देखते हुए हाशमी को गैस मार्स्क की जरूरत महसूस हो रही है। शुक्रवार को इमरान ने इस्टीग्राम पर अपनी हवाई यात्रा के दौरान ली गई तस्वीर शेयर की और लिखा- 'चेहेरे के आखिरी शेड्यूल के लिए फ्लाइट : दिल्ली, पोर्लेट। एक के लिए मुझे मस मस कहिए तो दूसरे के लिए मौजूद चाहिए।' दिल्ली में शूटिंग करके इमरान पोर्लेट में शूटिंग करेंगे।

